पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/24-26 प्रकाशित 01.12.2025 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाष : 9810117464, 9868051444

दानदाताओं से अपील

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों में सहयोग करने हेतु **खाता संख्या 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया,** घन्टाघर, दिल्ली– 110007, **आई. एफ. एस. कोड** SBIN0001280 पर सीधे भेज कर हमें फोन न. **9810117464** पर एस.एम.एस कर दें या **9868051444** पर googlepay कर दें।

—अनिल आर्य

वर्ष-42 अंक-13 मार्गशीर्ष-2082 दयानन्दाब्द 201 01 दिसम्बर से 15 दिसम्बर 2025 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 01.12.2025, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

आर्य समाज अशोक विहार फेज 3 का उत्सव सम्पन्न

हिन्दू मन्दिरों की आय हिंदुओं पर खर्च हो –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

रविवार 23 नवम्बर 2025, हिन्दू मन्दिरों की आय हिन्दू संस्थाओ पर ही खर्च होनी चाहिए अभी हाल ही में श्री माता वैष्णो देवी मंदिर जम्मू कश्मीर का मामला सामने आया है कि मेडिकल कॉलेज में 50 में से 42 सीट मुसलमान छात्रों को दी गई जो कि सैद्धान्तिक रूप से गलत है। जिस समुदाय से जो भी पैसा आया वह उसी में खर्च होने चाहिए। दूसरे समुदाय के छात्र मांसाहार आदि के सेवन करेंगे जिससे मर्यादा भंग होगी। अतः केंद्र सरकार से अनुरोध है कि वह हस्तक्षेप कर हिन्दू छात्रों के हितों की रक्षा करें जिससे असंतोष न पनपे, यह उद्गार केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने आर्य समाज अशोक विहार फेज 3 दिल्ली के उत्सव में व्यक्त किए। कार्यक्रम का शुभारंभ आचार्य देवेन्द्र शास्त्री ने यज्ञ करवा कर किया। आचार्य राजू वैज्ञानिक के प्रवचन हुए व गौरव आर्य के भजन ने समा बांध दिया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री सुमेंश सबरवाल ने किया व प्रधान अशोक जिन्दल ने धन्यवाद ज्ञापन किया. प्रमुख रूप से अनिता ग्रोवर ओमप्रकाश सूरी जीवन लाल आर्य , राकेश बेदी, अभय देव शास्त्री आदि उपस्थित थे।

<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<

शुभकामनाएं देते हुए सुधीर बंसल व रामकुमार जी को बधाई

परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य के जन्मोत्सव पर अपनी शुभकामनाएं देते हुए सुधीर बंसल जी फरीदाबाद। द्वितीय चित्र में रामकुमार जी को बधाई केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के प्रदेश संचालक रामकुमार सिंह आर्य की सुपुत्री का विवाह स्वाति संग विवेक के साथ संपन्न हुआ नव दंपति को हार्दिक शुभकामनाएं। दुल्हा विवेक के साथ जय भगवान गोयल, अनिल आर्य, महेन्द्र भाई, प्रवीण आर्य, रामकुमार सिंह, वेद प्रकाश आर्य एवं प्रवीण आर्या पिंकी।

जहां होता है भरपूर काम और प्रभु का गुणगान आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती: त्याग, तप और राष्ट्रसेवा के अमर प्रतीक

– आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री

स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती जिन्हें आरंभिक जीवन में मुंशीराम के नाम से जाना जाता था, भारतीय समाज और संस्कृति के पुनर्जागरण के उन महान व्यक्तित्वों में से एक थे जिन्होंने स्वामी दयानंद सरस्वती के विचारों को जीवन में आत्मसात् कर अपने कर्म, त्याग और तप के माध्यम से समाज को नई दिशा प्रदान की थी। वे न केवल एक तेजस्वी संन्यासी थे बल्कि भारत के स्वतंत्रता संग्राम, समाज सुधार और शिक्षा के क्षेत्र में अमिट छाप छोड़ने वाले महान पुरुष थे। दिनांक 23 दिसम्बर, 2025 से उनके बलिदान का 100वां वर्ष आरम्भ हो रहा है। यह अवसर हमें उनके आदर्शों को आत्मसात करने और समाज को संगठित करने का संकल्प लेने का प्रेरक क्षण प्रदान करता है।

स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती का जन्म 22 फरवरी 1856 को पंजाब के जालंधर जिले के तलवन गाँव में हुआ था। उनके पिता एक पुलिस इंस्पेक्टर थे और परिवार में समृद्धि का वातावरण था। उनके बाल्यकाल का नाम बृहस्पति था किंतु आगे चलकर वे मुंशीराम जी के नाम से प्रसिद्ध हुए। उनका प्रारंभिक जीवन भोग विलास और सुविधाओं में बीता किंतु नियति ने उन्हें वह मार्ग दिखाया जिसने उनके जीवन का उद्देश्य ही बदल दिया। स्वामी दयानंद सरस्वती से उनकी भेंट उनके जीवन का निर्णायक मोड़ सिद्ध हुई। उस समय तक मुंशीराम एक सफल वकील के रूप में ख्याति प्राप्त कर चुके थे। वे आर्यसमाज की गतिविधियों से जुड़ने लगे और समाज सुधार के कार्यों में सक्रिय भाग लेने लगे। उनकी पत्नी माता शिवदेवी जी अत्यंत धार्मिक और सेवा भाव से ओतप्रोत थीं। उनके निस्वार्थ प्रेम और स्वामी दयानंद के साक्षात्कार ने मुंशीराम के जीवन में अध्यात्म का नया प्रकाश जगा दिया।

विवाहोपरांत उनके दो पुत्र और दो पुत्रियाँ हुईं। जीवन में स्थायित्व आया किंतु पत्नी के निधन ने उनके अंतर्मन को झकझोर दिया। यही वह क्षण था जब उन्होंने सांसारिक जीवन का परित्याग कर संन्यास ग्रहण किया और 1917 में वे स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती के नाम से विख्यात हुए। उनका संन्यास मात्र वैराग्य का प्रतीक नहीं था बल्कि यह कर्मयोग का आरंभ था।

सन् 1902 में उन्होंने हरिद्वार में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना की। यह संस्थान भारतीय संस्कृति और शिक्षा के पुनरुद्धार का केंद्र बना। यहाँ वैदिक ज्ञान और आधुनिक विषयों का अद्भुत समन्वय हुआ। स्वामी श्रद्धानंद का मानना था कि भारतीयता की जड़ें तभी मजबूत होंगी जब हमारी शिक्षा भारतीय संस्कारों से ओतप्रोत होगी। उनके द्वारा स्थापित गुरुकुल आज भी उसी भावना का सजीव उदाहरण है।

स्वामी श्रद्धानंद जी ने न केवल शिक्षा के क्षेत्र में कार्य किया बल्कि समाज सुधार के अनेक आंदोलन भी चलाए। सन् 1920 के दशक में उन्होंने शुद्धि आंदोलन प्रारंभ किया जिसका उद्देश्य उन लोगों को पुनः अपने मूल धर्म में लाना था जो किसी कारणवश उससे दूर हो गए थे। उन्होंने मलकाना राजपूतों समेत अनेक समुदायों को अपने पूर्वजों की संस्कृति और धर्म से जोड़ने का प्रयास किया। इस कार्य ने उन्हें जनता के हृदय में अमर बना दिया।

वे अछूतों के उद्धार के लिए भी समर्पित थे। उन्होंने मंदिरों के द्वार सबके लिए खोलने की वकालत की और सामाजिक समानता को हिंदू धर्म की आत्मा बताया। डॉ. भीमराव आम्बेडकर ने उन्हें अछूतों के महानतम और सबसे सच्चे हितैषी कहकर सम्मानित किया। उनका जीवन इस बात का प्रमाण है कि धर्म का सार करुणा, सेवा और समरसता में निहित है।

स्वामी श्रद्धानंद का योगदान स्वतंत्रता संग्राम में भी उल्लेखनीय रहा। 1919 से 1922 तक वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से जुड़े रहे। उन्होंने जनता को आत्मनिर्भरता और स्वदेशी के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। 1922 में गुरु के बाग सत्याग्रह के दौरान उनके ओजस्वी भाषण से प्रभावित होकर हजारों युवा स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े। अंग्रेज सरकार ने उन्हें गिरफ्तार किया किंतु उनका मनोबल अटूट रहा।

23 दिसंबर 1926 को जब वे दिल्ली में अपने निवास पर थे एक मुस्लिम उन्मादी अब्दुल रशीद ने धर्म चर्चा के बहाने उनके घर में प्रवेश किया और गोली मारकर उनकी हत्या कर दी। उनका बलिदान उस कालखंड की सांप्रदायिक चुनौतियों के बीच एक अमर संदेश छोड़ गया कि सत्य और धर्म के मार्ग पर चलने वाला व्यक्ति मृत्यु के पश्चात भी जीवित रहता है।

भारत सरकार ने 1970 में उनके सम्मान में एक स्मारक डाक टिकट जारी किया। आज जब उनके बलिदान को 100 वर्ष हो रहे हैं, हमें यह स्मरण करना चाहिए कि स्वामी दयानंद सरस्वती के महानतम शिष्य स्वामी श्रद्धानंद जी महाराज ने अपने जीवन का प्रत्येक क्षण हिंदू समाज और संस्कृति के उत्थान को समर्पित किया था। उनका जीवन हमें यह सिखाता है कि समाज तभी प्रगति कर सकता है जब वह अपने मूल संस्कारों, शिक्षा और संस्कृति से जुड़ा रहे। इस अवसर पर हम सभी को संकल्प लेना चाहिए कि हम अपने समाज को संगठित करेंगे, हिंदू संस्कृति के प्रचार प्रसार में योगदान देंगे और अपनी आने वाली पीढ़ियों को भी अपनी जड़ों से जोड़ने का प्रयास करेंगे। स्वामी श्रद्धानंद का जीवन एक दीपक की तरह है जो हमें यह मार्ग दिखाता है कि धर्म और राष्ट्र की सेवा ही मनुष्य जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य है।

–फ्लैट नंबर सी 1, पूर्ति अपार्टमेंट, विकासपुरी, नई दिल्ली–18, मो. 9810084806

मांगे राम गर्ग की जयन्ती व मास्टर सुरत सिंह को दी श्रद्धांजलि

रविवार 23 नवम्बर 2025 बीजेपी दिल्ली प्रदेश के पूर्व अध्यक्ष श्री मांगे राम गर्ग की जयंती पर संबोधित करते अनिल आर्य। द्वितीय चित्र में हरिओम दलाल को पितृ शोक रविवार 17 नवम्बर 2025, परिषद के बहादुरगढ़ जिला अध्यक्ष हरिओम दलाल के पूज्य पिता श्री मास्टर सुरत सिंह की श्रद्धांजलि सभा में अनिल आर्य सम्मिलित हुए स सभा का संचालन परिषद के पूर्व राष्ट्रीय महासचिव राजपाल आर्य ने किया।

हमारी रक्षा हमारी समान विचारधारा के लोगों के संगठित होने पर ही संभव

— मनमोहन कुमार आर्य

मनुष्य मननशील प्राणी है। वह सभी विषयों पर विचार करता है और उन पर अपनी स्वतन्त्र सम्मति वा राय रखता है। वह अपने समान विचारों वाले लोगों को पसन्द करता है। परस्पर विरोधी विचारधारा वाले लोग एक—दूसरे को पसन्द नहीं करते व इस प्रकार सहयोग नहीं करते जैसे कि समान विचारधारा के लोग आपस में करते हैं।

मनुष्य अध्ययन कर अपने अज्ञान को दूर व कम कर सकता है। जिस समाज में कम शिक्षित व्यक्ति होते हैं वह समाज अधिक अज्ञान, अन्धविश्वासों व भ्रान्तियों से ग्रस्त होता है। मनुष्य यदि सत्य का निर्णय करना चाहे तो वह सभी विषयों में सत्य और असत्य का निर्णय कर सकता है। इन विषयों में ईश्वर का सत्यस्वरूप, उसके गुण, कर्म व स्वभाव, उसकी प्राप्ति के साधन, ईश्वर प्राप्ति से होने वाले सुख, आनन्द—प्राप्ति तथा परलोक के सुख सहित मोक्ष की प्राप्ति भी सम्मिलित है। हम अपने अध्ययन को बढ़ा कर ईश्वर की उपासना की एक ऐसी पद्धति भी बना सकते हैं जो सर्वथा निर्दोष हो तथा जिसके आचरण से हम व अन्य सभी मनुष्य भी ईश्वर का साक्षात्कार व प्रत्यक्ष कर सकते हैं। हजारों वर्ष पूर्व उपासना की वह पद्धति हमें महर्षि पतंजलि ने योगदर्शन के नाम से प्रदान की थी। आधुनिक काल में भी ऋषि दयानन्द ने मानव जाति को ईश्वर की उपासना के लिए उपासना की सत्य विधि 'सन्ध्या विधि' प्रदान की है जिससे उपासना करने से हम ईश्वर को प्राप्त होते हैं। हमने ऋषि दयानन्द जी का लिखा सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ पढ़ा है। उनका जीवन चरित तथा अन्य सभी ग्रन्थों को भी पढ़ा है। सत्यार्थप्रकाश में किसी भी विषय के प्रायः सभी पहलुओं को प्रस्तुत कर उनकी समीक्षा व विश्लेषण कर सत्य मान्यता का प्रकाश किया गया है। ऐसा ग्रन्थ इससे पूर्व व बाद में नहीं लिखा गया है। मनुष्य समाज का मार्गदर्शन करने सहित मानवजाति की सर्वांगीण उन्नति के लिए संसार में सत्यार्थप्रकाश सर्वोत्तम ग्रन्थ है। सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन कर हम ईश्वर, जीवात्मा तथा प्रकृति सहित कार्य—सृष्टि एवं मनुष्य के कर्तव्य—धर्म, आचार, विचार, शरीर—आत्मा की उन्नति आदि सभी विषयों को जान सकते हैं और अपने जीवन को इसके लक्ष्य धर्माचरण, अर्थ प्राप्ति, कामनाओं की सिद्धि और मोक्ष प्राप्ति की ओर ले जा सकते हैं। ऐसा होने पर ही हमारा यथार्थरूप में कल्याण हो सकता है। यदि हम ऐसा नहीं करते तो हमारी भौतिक उन्नति तो जीवन में हो सकती है परन्तु हम आध्यात्मिक उन्नति अर्थात् आत्मा—परमात्मा के ज्ञान व परमात्मा की प्राप्ति के लिए की जाने वाली साधना तथा उससे होने वाले लाभों से जीवन भर वंचित ही रहते हैं। मनुष्य को सीमित मात्रा में धन व साधनों की आवश्यकता होती है। इसे पुरुषार्थ कर प्राप्त किया जा सकता है। इसके लिए अनाचार व भ्रष्ट आचरण किये जाने की आवश्यकता नहीं होती। मनुष्य को अपनी कामनाओं को सत्य पर स्थित करना चाहिये। वेदाध्ययन करने से हमें अपने हित व हानियों का यथार्थरूप में ज्ञान होता है। अतः वेदाध्ययन सहित दर्शन, उपनिषद, मनुस्मृति, रामायण, महाभारत, सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, ऋषि दयानन्द जीवनचरित आदि सभी ग्रन्थों का अध्ययन कर मार्गदर्शन प्राप्त करना चाहिये। इससे निःसन्देह मनुष्य का जीवन उत्तम व आदर्श बनेगा।

मनुष्य की सुरक्षा अत्यन्त आवश्यक है। उसे समाज में अन्य विचारधाराओं व उनकी अच्छी व बुरी योजनाओं का ज्ञान होना चाहिये। उनसे अपनी रक्षा के प्रयत्न भी करने चाहिये। इसके लिये आवश्यक है कि मनुष्य अच्छे व देश, समाज व मनुष्य के हितकारी चिन्तन करने वाले समाज व लोगों से जुड़े। अपने विचारों से समाज के अन्य लोगों को सहमत करे व संगठित होकर अपनी रक्षा व उन्नति के विचार करे। हमें वर्तमान तथा भविष्य में अपनी व अपनी सन्ततियों की रक्षा पर भी विचार करना चाहिये। हमारी सन्ततियों को हमारी विचारधारा विरोधी विचारों व संगठनों से भय हो सकता है। अतः हमें अपने विचार वाले लोगों के साथ मिलकर संगठित होना चाहिये। यदि किसी एक बन्धु पर दुःख या मुसीबत आती है तो सभी बन्धुओं की उसकी रक्षा व सहायता करनी चाहिये। उस बन्धु को आश्रयहीन नहीं छोड़ना चाहिये। यदि हम ऐसा नहीं करेंगे तो आने वाले समय में हमारी भी दुर्दशा हो सकती है। अपने भविष्य के सुख के लिए हमें अपने सभी बन्धुओं का निरन्तर हित करते रहना चाहिये। आदर्श रूप में संगठित होने के लिए हमें अपनी शैक्षिक एवं सत्य धर्म शास्त्रों के ज्ञान की योग्यता बढ़ाने पर ध्यान देना चाहिये और अपनी लोकैषणा, वित्तैषणा तथा पुत्रैषणा आदि स्वार्थों पर नियंत्रण रखना चाहिये। इन एषणाओं के कारण ही समाज में संगठन शिथिल व कमजोर होता है जिससे समाज व जाति को हानि होती है। यह बात सभी बन्धु जानते हैं परन्तु फिर भी कुछ लोग इस पर नियंत्रण नही रख पाते। अतः सभी जातीय बन्धुओं पर इस पर ध्यान देना चाहिये और जातीय हितकारी संगठनों को वेद के ज्ञान के प्रकाश में तथा स्वार्थहीन होकर सहयोग देना चाहिये। देश व धर्म हमारे जीवन उद्देश्य वा जीवन के एजेण्डे में सर्वोपरि होने चाहिये। हमें अपने स्वार्थों के लिए देशहित से कभी भी समझौता नहीं करना चाहिये। देश और धर्म रहेगा तभी हम और हमारी सन्ततियां जीवन्त व सुखपूर्वक रह सकेंगी। हमारे आचरण व कार्यों का प्रभाव व दुष्प्रभाव हम पर व हमारी भावी सन्ततियों पर पड़ेगा, इसलिए हमें सावधान होकर जातीय संगठनों को कमजोर करने वाले आचरण व व्यवहारों से बचना चाहिये और अपना जीवन व आचरण धर्म के सिद्धान्तों के अनुरूप बनाना व रखना चाहिये।

आर्यसमाज सिद्धान्तों व विचारधारा की दृष्टि से संसार का सर्वोत्तम संगठन है। आर्यसमाज के सभी सिद्धान्त व विचार सत्य पर आधारित हैं। असत्य विचारों व मान्यताओं का आर्यसमाज द्वारा त्याग किया गया है। जो बातें अज्ञान पर आधारित हैं, उन अन्धविश्वासों का आर्यसमाज व इसके अनुयायी त्याग करते हैं तथा अन्यों को भी ऐसा करने की प्रेरणा करते हैं। हमें आश्चर्य एवं दुःख होता है कि जैसी एकता व सुदृणता आर्यसमाज के संगठन में होनी चाहिये थी, वैसी देखने को नहीं मिलती। कुछ लोगों के कारण समाज उस तेजी से अपने लक्ष्य "कृण्वन्तों विश्वमार्यम्" अर्थात् विश्व को श्रेष्ठ व उत्तम गुण—कर्म—स्वभाव से युक्त करने की ओर तेजी से बढ़ नहीं पा रहा है। हमें अपनी कमजोरियों को दूर करना चाहिये। यदि ऐसा नहीं करेंगे तो इसके दुष्परिणाम बहुत शीघ्र हमारे सम्मुख उपस्थित होंगे। अतः सभी सच्चे ऋषिभक्तों को अपने कर्तव्यों को समझकर इसका पालन करना चाहिये और समाज को कमजोर करने वाले लोगों को किसी भी प्रकार का सहयोग नहीं करना चाहिये। समाज संगठित एवं बलशाली होगा तभी हमारी व हमारी सन्ततियों की रक्षा होगी। अपने जातीय दूरगामी हितों को ध्यान में रखकर हमें अन्य देश—हितकारी संगठनों से भी सहयोग करना चाहिये। उनमें यदि अविद्या है तो उसका विनम्रता से प्रकाश करना चाहिये और उन्हें सत्य को स्वीकार करने का अनुरोध करना चाहिये। हमारा ध्यान इस बात पर केन्द्रित होना चाहिये कि हम वेद एवं आर्यसमाज के सिद्धान्तों, मान्यताओं व सत्य परम्पराओं का अनुकरण व पालन करें तथा इससे अन्य सभी को परिचित करायें और उन्हें भी सत्य वैदिक मान्यताओं को ग्रहण करने का आग्रह करें। ऋषि दयानन्द चाहते थे कि संसार के सभी लोग ईश्वरीय ज्ञान वेद को अपनायें एवं सब एकमत होकर सभी दुर्गुणों, दुर्व्यसनों तथा दुःखों से दूर होकर सर्वांगीण उन्नति करें। यह लक्ष्य प्राप्त होने के स्थान पर दूर होता जा रहा है, अतः इस पर विद्वानों को विचार कर आर्यजनता सहित देश की जनता का मार्गदर्शन करना चाहिये। आर्यसमाज का दसवां नियम है कि सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम पालने में सब स्वतन्त्र रहें। प्रत्येक वैदिक धर्मी को इस नियम पर विचार कर इसका पूर्णरूप से अपने जीवन में पालन करना चाहिये। इस नियम को यदि हम समाज में प्रवृत्त कर करा सकें तो इससे हमारा संगठन सुदृण हो सकता है। आर्यसमाज तथा हिन्दू समाज का संगठन सुदृण तथा अविद्या से रहित हो, इसका प्रयास राम तथा कृष्ण को मानने वाले सभी सनातन धर्मियों को करना चाहिये। सब सनातन ज्ञान वेद के अनुसार जीवन व्यतीत करते हुए देश, समाज, जाति, धर्म तथा संस्कृति की रक्षा करने में योगदान करें तथा यह सब प्रलयवस्था तक सुरक्षित रहें, इस भावना से हमने कुछ विचार प्रस्तुत किए हैं। आप सब भी देश की वर्तमान स्थिति पर विचार करें और सत्यासत्य का चिन्तन—मनन कर सत्य को ग्रहण कराने के लिए अपनी भूमिका स्वयं निर्धारित करें।

आगामी कार्यक्रमः नोट कर लें

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में **मंगलवार 23 दिसम्बर 2025** को प्रातः 10 बजे स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस भव्य रूप से मनाया जाएगा स्थान की घोषणा शीघ्र की जाएगी तिथि नोट कर ले।

<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<

प. राम प्रसाद बिस्मिल को याद करे

भारत के स्वतंत्रता संग्राम के **महानायक प. राम प्रसाद बिस्मिल का बलिदान दिवस 19 दिसम्बर** को आ रहा है। आप सभी से अनुरोध है कि बिस्मिल की स्मृति में कोई ना कोई कार्यक्रम अवश्य रखें— अनिल आर्य

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा 2020 से 749वां वेबिनार सम्पन्न

'सत्यार्थ प्रकाश की महत्ता' विषय पर गोष्ठी सम्पन्न

सत्यार्थ प्रकाश में हर समस्या का समाधान –आचार्या विमलेश बंसल

मंगलवार 18 नवम्बर 2025, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान मे 'सत्यार्थ प्रकाश की महता' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया।यह कोरोना काल से 748 वाँ वेबिनार था। वैदिक विदुषी आचार्या विमलेश बंसल दर्शनाचार्या ने कहा कि सत्यार्थ प्रकाश एक अमर ग्रन्थ है क्योंकि यह एक महान दूर दृष्टा और समाज सुधारक महर्षि दयानंद की अनुपम देन तो है ही,इसमें लिखा हुआ एक–एक शब्द चिर काल तक प्रत्येक प्राणी मात्र के लिए एक मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में काम आएगा। इन शब्दों की न कोई एक्सपायरी (काल वाहिका) है और न ही इनकी उपादेयता कभी कम होने वाली है।यह ग्रन्थ ईश्वर की अजर अमर वेद वाणी पर आधारित होने से सार्वजनीन,सार्वकालिक, सार्वभौमिक है। महर्षि दयानंद भक्त गुरुदत्त विद्यार्थी ने कहा था– इस ग्रन्थ को खरीदने के लिए यदि सारी संपत्ति भी बेचनी पड़े तो भी वह मूल्य इस पुस्तक के लिए कम होगा। संपूर्ण ब्रह्मांड के प्रत्येक व्यक्ति को इस अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को अवश्य पढ़ना चाहिए जिससे वह अपने साथ स्व परिवार,समाज,राष्ट्र व समस्त जगत के कल्याण के लिए अपना सार्थक योगदान सुनिश्चित कर सकें। मुख्य अतिथि राजश्री यादव व अध्यक्ष सुधीर बंसल ने भी इसे क्रान्तिकारी ग्रंथ बताया।परिषद् अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन किया व प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया। गायिका कौशल्या अरोड़ा, शोभा बत्रा, संतोष धर, प्रवीना ठक्कर, जनक अरोड़ा, रविन्द्र गुप्ता एवं कमला हंस आदि ने मधुर भजन सुनाए।

<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<

जिन्होंने अपने प्राण देकर हमें जगाया उनको ही आज क्यों भूल गए हम (24 नवंबर) पर विशेष..

गुरु तेग बहादुर जी "हिन्द की चादर" बलिदान दिवस

संसार को ऐसे बलिदानियों से प्रेरणा मिलती है, जिन्होंने जान तो दे दी, परंतु सत्य का त्याग नहीं किया। नवम पातशाह श्री गुरु तेग बहादुर जी भी ऐसे ही बलिदानी थे। गुरु जी ने स्वयं के लिए नहीं, बल्कि दूसरों के अधिकारों एवं विश्वासों की रक्षा के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया। अपनी आस्था के लिए बलिदान देने वालों के उदाहरणों से तो इतिहास भरा हुआ है, परंतु किसी दूसरे की आस्था की रक्षा के लिए बलिदान देने की एक मात्र मिसाल है–नवम पातशाह की शहादत। औरंगजेब को दिल्ली के तख्त पर कब्जा किए 24–25 वर्ष बीतने को थे। इनमें से पहले 10 वर्ष उसने पिता शाहजहां को कैद में रखने और भाइयों से निपटने में गुजारे थे। औरंगजेब के अत्याचार अपने शिखर पर थे।

बात 1675 ई. की है। कश्मीरी पंडितों का एक दल पंडित किरपा राम के नेतृत्व में गुरु तेग बहादुर जी के दरबार में कीरतपुर साहिब आया और फरियाद की– हे सच्चे पातशाह, कश्मीर का सूबेदार बादशाह औरंगजेब को खुश करने के लिए हम लोगों का धर्म परिवर्तन करा रहा है, आप हमारी रक्षा करें। यह फरियाद सुनकर गुरु जी चिंतित हो उठे। इतने में, मात्र नौ वर्षीय श्री गुरु गोविंद सिंह बाहर से आ गए। अपने पिता को चिंताग्रस्त देखकर उन्होंने कारण पूछा। गुरु पिता ने कश्मीरी पंडितों की व्यथा कह सुनाई। साथ ही यह भी कहा कि इनकी रक्षा सिर्फ तभी हो सकती है, जब कोई महापुरुष अपना बलिदान करे। बालक गोविंद राय जी ने स्वाभाविक रूप से उत्तर दिया कि इस महान बलिदान के लिए आपसे बडा महापुरुष कौन हो सकता है? नवम पातशाह ने पंडितों को आश्वासन देकर वापस भेजा कि अगर कोई तुम्हारा धर्म परिवर्तन कराने आए, तो कहना कि पहले गुरु तेग बहादुर का धर्म परिवर्तन करवाओ, फिर हम भी धर्म बदल लेंगे। नवम पातशाह औरंगजेब से टक्कर लेने को तैयार हो गए। बालक गोविंद राय को गुरुगद्दी सौंपी और औरंगजेब से मिलने के लिए दिल्ली रवाना हो गए। औरंगजेब ने गुरु जी को गिरफ्तार किया और काल–कोठरी में बंद कर दिया। गुरु जी के सामने तीन शर्तें रखी गई–या तो वे धर्म परिवर्तन करें या कोई करामात करके दिखाएं या फिर शहादत को तैयार रहें। गुरु जी ने पहली दोनों शर्तें मानने से इंकार कर दिया।

परिणामस्वरूप गुरु जी के साथ आए तीन सिखों–भाई मती दास, भाई सती दास और भाई दयाला को यातनाएं देकर शहीद कर दिया गया। गुरु जी इन सबके लिए पहले से ही तैयार थे। उन्होंने कहा–मैं धर्म परिवर्तन के खिलाफ हूं और करामात दिखाना ईश्वर की इच्छा के विरुद्ध है। गुरु जी को आठ दिन चांदनी चौक की कोतवाली में रखा गया। उन पर अत्याचार किया गया, परंतु वे अचल रहे और अंततः नानकशाही तिथि पत्रानुसार 24 नवंबर 1675 के दिन उन्हें चांदनी चौक में शहीद कर दिया गया। गुरु जी के एक सिख भाई जैता जी ने गुरु जी के शीश को आनंदपुर साहिब लाने की दिलेरी दिखाई। गुरु गोविंद सिंह जी ने भाई जैता के साहस से प्रसन्न होकर उन्हें रंगरेटे–गुरु के बेटे का खिताब दिया। गुरु जी के शीश का दाह–संस्कार आनंदपुर साहिब में किया गया।'

गुरु जी के शरीर को भाई लखी शाह और उनके पुत्र अपने गांव रकाबगंज ले गए और घर में आग लगाकर गुरु जी का दाह–संस्कार किया। आज यहां गुरुद्वारा रकाबगंज, दिल्ली सुशोभित है। दिल्ली में आज भी गुरुद्वारा शीशगंज नवम पातशाह श्री गुरु तेग बहादुर जी की बेमिसाल शहादत की याद दिलाता है। आज भी लोग उन्हें हिंद की चादर कह कर याद करते हैं।

राष्ट्रवादी शिवसेना का प्रदर्शन

रविवार 23 नवम्बर 2025, यूनाइटेड हिन्दू तिवदज व राष्ट्रवादी शिव सेना के संयुक्त तत्वावधान में दिल्ली के शाहदरा चौक पर श्री जय भगवान गोयल के नेतृत्व में प्रदर्शन हुआ। श्री माता वैष्णो देवी ट्रस्ट के कॉलेज में हिन्दू छात्रों को पूरा हिस्सा देने की मांग की गई परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य भी सम्मिलित हुए।

सम्पादकः **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**, 2199/63,नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली–5 दूरभाष : 41548503 **मो.** : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी–176–177, कबीर बस्ती, दिल्ली–7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970